मधुबन ओम् शान्ति अंक 300 जुलाई 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-06-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा त्याग द्वारा श्रेष्ठ भाग्य अनुभव करने वाले, कदम-कदम में फालो फादर कर, स्वयं को मेहमान और महान समझने वाले, सर्व की प्रेरणास्रोत निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - जून मास हम सबकी अति स्नेही मीठी मम्मा का मास है, सभी मीठी माँ की विशेषताओं को जानते, कैसे मम्मा सदा हाँ जी का पाठ पढ़ते हुए, हुक्मी हुक्म चला रहा है, इसी एक स्मृति से नम्बरवन में चली गई। कदम कदम पर आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार बनने की प्रेरणा देने वाली, त्याग तपस्या की प्रतिमूर्ति हम सबकी मीठी जगत अम्बा माँ और हमारी बड़ी माँ ब्रह्मा के कदम पर कदम रखते हुए हम सब ब्राह्मण जीवन में सदा उन्नति करते आगे बढ़ रहे हैं। अभी तो विश्व के कोने-कोने में 21 जून को ''योग दिवस'' के रूप में भी मना रहे हैं। परमात्मा पिता द्वारा सिखाया हुआ यह राजयोग सर्वश्रेष्ठ योग है, इस राजयोग द्वारा ही तन-मन स्वच्छ और स्वस्थ बनेगा। यह सन्देश देने का बहुत अच्छा अवसर है। तो आप सब बहुत अच्छी सेवायें कर रहे हो, समय प्रति समय सभी की सेवाओं के अच्छे अच्छे समाचार मिलते रहते हैं। सेवा के साथ स्व-स्थिति पर भी सबका ध्यान है। अभी तो जुलाई-अगस्त मास, बरसात के दिनों में सब तरफ योग की बहुत अच्छी भट्ठियां चलेंगी। संस्कार परिवर्तन द्वारा संसार परिवर्तन की यही सरल विधि है।

मीठे बाबा ने हम सबको जो भी अच्छे कर्म सिखाये हैं, उसका फल और बल अच्छे से अच्छा है। हमें बाबा को याद नहीं करना पड़ता, स्वत: सहज याद आती है क्योंकि बाबा ही करन-करावनहार है। करता कराता वही है, इसलिए क्या करूँ, कैसे करूँ .. यह क्वेश्चन नहीं है। हमें सिर्फ श्रीमत में आज्ञाकारी, सम्बन्ध में वफादार, कारोबार में ईमानदार बनकर रहना है। बाकी जो ड्रामा में नूँधा है, वह अच्छा ही है।

दिल, दिमाग, दृष्टि में एक दिलाराम ही बसा हुआ है। शान्ति हमारा धर्म है, मुस्कराना हमारा कर्म है। बाबा को और बाबा के ज्ञान को अपनाने से कोई भी बात मुश्किल नहीं लगती है। हमारे अन्दर अगर धीरज का गुण है तो नेचुरली मीठा बन जाते हैं। मन शान्त है तो बुद्धियोग आलमाइटी से है। फिर बाबा जो कराये उसमें बहुत ताकत है। हम अतीन्द्रिय सुख के झूले में, शान्ति, प्रेम, आनन्द के झूले में झूल रहे हैं। परचिंतन, परदर्शन से फ्री हैं। हमारे चिंतन में बाबा ही बाबा है इसलिए हम महान, पदमापदम भाग्यशाली हैं। एक बाबा के चिंतन में रहने से कभी थकावट नहीं होती है। बाबा ने थोड़े समय में कितनी अच्छी पढ़ाई, पालना दी है। तो शुक्रिया कहने के बिगर रह नहीं सकते हैं। मैं तो जब भी बाबा को देखती हूँ तो अनुभव होता कि बाबा सभी बच्चों को दृष्टि देकरके उड़न खटोले में उड़ा रहा है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है, हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ मुराद हांसिल हो रही है। जो संकल्प करते हैं बाबा उसे पूरा कर देता है। साइलेंस में रहने से मन, बुद्धि, संस्कार तीनों ही अच्छा काम करने लग पड़े हैं। मनन चिंतन मंथन ने ज्ञान, योग, धारणा और सेवा चारों सबजेक्ट में एक्सपर्ट बना दिया है। दिव्य बुद्धि रूपी गिफ्ट लिफ्ट का काम कर रही है। इस लिफ्ट से ऊपर पहुंच ही जायेंगे, सिर्फ अटेन्शन देने की बात है। साइलेंस में रहने से रियलाइजेशन अच्छी हो जाती है इससे परिवर्तन होना सहज हो जाता है। तो बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें साइलेन्स का अच्छा अनुभव करते, सदा उड़ती कला में उड़ रहे हो ना।

अच्छा - सभी को हमारी बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद स्वीकार हो।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी

+91 95 3355 3366

ये अव्यक्त इशारे

“विभिन्न परिस्थितियों में एकरस स्थिति बनाओ”

1) जो आलराउण्ड सर्विस करने वाले हैं उन्हें विशेष इस बात का ध्यान रखना है कि कैसी भी परिस्थिति में अपनी स्थिति एकरस रहे तब सफलता मिलेगी। श्रीमत में जब मनमत, देह-अभिमानपने की मत, शूद्र पने की मत मिक्स करते हो तब स्थिति एकरस नहीं रहती। मन भिन्न-भिन्न रसों में है तो स्थिति भी भिन्न-भिन्न है। एक ही रस में रहे तो स्थिति एकरस रहेगी।

2) एकरस स्थिति बनाने के लिए सिवाए एक के और कुछ भी देखते हुए न देखो। यह जो कुछ देखते हो यह कोई भी वस्तु रहने वाली नहीं है। तो एकरस, स्थेरियम तब रह सकेंगे जब कोई भी दृश्य देखते क्यों, क्या की उत्पति न हो, यही व्यर्थ संकल्पों की हलचल का कारण है। इस क्यु की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी।

3) सदा उमंग-हुल्लास में एकरस रहने के लिए जो भी सम्बन्ध में आते हैं – चाहे स्टूडेन्ट, चाहे साथी सभी को सन्तुष्ट करने की उत्कंठा हो। जिसको भी देखो उससे हर समय गुण उठाते रहो। सर्व के गुणों का बल मिलने से सदाकाल के लिए उत्साह एकरस रहेगा।

4) बुद्धि को एक ठिकाने पर टिकाने की जो युक्ति मिली है, वह स्मृति में रखो। हिलने न दो। हिलना अर्थात् हलचल पैदा करना। फिर युद्ध में समय बहुत व्यर्थ जाता है। जैसे तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं वैसे अपनी एकरस स्थिति के आसन पर विराजमान रहो तब भविष्य सिंहासन मिलेगा।

5) सभी से श्रेष्ठ तख्त बापदादा के दिल तख्तनशीन बनना है। लेकिन इस तख्त पर बैठने के लिए पहले अचल, अड़ोल, एकरस स्थिति का तख्त चाहिए। एकरस स्थिति के तख्त पर तब स्थित रह सकेंगे जब अकाल तख्त नशीन बनने का अभ्यास होगा।

6) किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या अथवा माया का वार, वार नहीं है लेकिन खेल के समान अनुभव हो तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे और अवस्था एकरस रहेगी। लेकिन अगर इसे वार समझेंगे तो घबरायेंगे भी और हलचल में भी आ जायेंगे।

7) आत्मिक स्थिति के अभ्यास से वायुमण्डल को रुहानी बनाओ तो और सब बातें स्वतः ठीक हो जायेंगी, सब एकमत और एकरस हो जायेंगे फिर माया भी नहीं आयेगी क्योंकि वायुमण्डल शक्तिशाली होगा। वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने के लिए याद के प्रोग्राम रखो और आपस में उन्नति के लिए रुह-रुहान की क्लासेज़ करो, स्नेह मिलन करो। धारणा की क्लासेज़ रखो तो सफलता मिल जायेगी।

8) सदा एक की याद में रहकर एकरस अवस्था बनाओ तो वन-वन और वन में आ जायेंगे। बाहर रहते हुए भी यही पाठ पक्का करो - ‘‘सी फादर, फालो फादर’’, तो कभी किसी परिस्थिति में डगमग नहीं होंगे क्योंकि साकार बाप कभी डगमग नहीं हुए, सदा अथक और एकरस स्थिति का एक्जैम्पुल बनकर दिखाया वैसे आप बच्चों को भी औरों के प्रति एक्जैम्पुल बनना है, यही सर्विस है।

9) एकरस स्थिति में स्थित होने के लिए कर्मेन्द्रिय जीत बनो। कोई एक कर्मेन्द्रिय की आकर्षण भी एक बाप का बनने नहीं देगी। एकरस स्थिति में स्थित होने नहीं देगी। नम्बरवन में जाने नहीं देगी।

10) एकरस स्थिति बनाने के लिए कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा - इसका यह पार्ट चल रहा है। वह अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखेगा और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखेगा, यही एकरस स्थिति बनाने का साधन है।

11) सदा एकरस, अचल-अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की प्वाइंट है। इसे शक्ति के रूप में धारण करने वाला कभी हार नहीं खा सकता। लेकिन जो सिर्फ प्वाइंट के रूप में धारण करते हैं वह ड्रामा की प्वाइंट वर्णन भी करेंगे और हलचल में भी आते रहेंगे।

12) विनाशी साधनों को सहारा वा आधार नहीं बनाओ। यह सब निमित्त मात्र हैं, सेवा के प्रति हैं। सेवा अर्थ कार्य में लगाया और न्यारे। साधनों की आकर्षण में मन आकर्षित नहीं होना चाहिए। एकरस का अर्थ यह नहीं कि सदा एक जैसी रफ्तार हो। एकरस अर्थात् सदा उड़ती कला की महसूसता रहे।

13) सर्व सम्बन्धों की अविनाशी तार एक से जुटी हुई हो। एक बाप दूसरा न कोई - यह दृढ़ संकल्प हो, एक भी सम्बन्ध कम न हो, सर्व सम्बन्धों की डोर एक से बंधी हुई हो तब एकरस स्थिति स्वतः रहेगी।

14) सदा हर परिस्थिति में, परिस्थिति बदले लेकिन स्थिति नहीं बदले। स्थिति सदा खजानों से सम्पन्न और सन्तुष्ट रहे तो परिस्थिति आयेगी और चली जायेगी। परिस्थिति की क्या शक्ति है जो आपकी सन्तुष्टता को ले जाये। परिस्थिति का खेल भले देखो लेकिन साक्षी बन, सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर देखो।

15) जब इतने सभी अनेक होते भी एक दिखाई दो और एक की ही लगन में मगन, एकरस स्थिति में स्थित रहो तब प्रत्यक्षता की निशानी देखने में आयेगी। आप सब की प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता

को लायेगी।

16) जैसे सर्व आत्माओं को ज्ञान की रोशनी देने के लिये सदैव शुभ भावना व कल्याण की भावना रख प्रयत्न करते रहते हो। ऐसे ही अपने इस दैवी संगठन को भी एकरस स्थिति में स्थित कर संगठन की शक्ति को बढ़ाने के लिए एक-दूसरे के प्रति भिन्न-भिन्न रूप से प्रयत्न करो, जिससे किसी को भी इस दैवी संगठन की मूर्त में एक-रस स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार हो, जब इस दैवी संगठन की एकरस सम्पूर्ण स्थिति प्रख्यात होगी तब बापदादा की प्रत्यक्षता समीप आयेगी।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 14-01-14 *मधुबन*

"सदा लाइट का क्राउन पहनना है तो मन्सा में भी साधारण संकल्प न हों, सदा शुद्ध शान्त श्रेष्ठ और दृढ़ संकल्पों से हर कार्य सफल हुए पड़े हैं"

(दादी जानकी)

वण्डरफुल बाबा, वण्डरफुल ड्रामा, बाबा कहता है वण्डरफुल मेरे बच्चे हैं क्योंकि अभी यह नहीं कहते पुरुषार्थ करेंगे, यह होगा, देखा जायेगा... यह भाषा नहीं है। जो करना है अब कर ले। क्या करना है? पूछने की बात नहीं है। कैसे करना है, यह भाषा नहीं है। बाबा प्रैक्टिकली कहता है ऐसे मिसाल बनो जो तुमको देख औरों को पुरुषार्थ करना सहज लगे। जैसे बाबा करा रहा है, हम कर रहे हैं। मैं एक सेकेण्ड एक मिनट रूकती हूँ, हर एक अपने आपको देखे, समझे प्रैक्टिकली नेचुरल ऐसा करे जो यह नहीं कि मैं करता हूँ! बाबा करा रहा है, हम कर रहे हैं। समय करा रहा है, यह समय ऐसा है। भावना करा रही है।

जैसा सोचते हैं सूक्ष्म ऐसा भोगते हैं इसलिए सोचूं क्या? करे कराये आपेही आप, मानुष के नाही कुछ हाथ। अगर मैं अपने आपको मनुष्य समझूंगी तो कुछ नहीं कर सकूंगी, पर ब्रह्मा मुख वंशावली बच्चा हूँ तो कर लेंगे। अभी भी मैं बच्चा हूँ ना, स्टूडेन्ट हूँ, जैसा बाबा बना रहा है ऐसा सैम्पल बनी हूँ! हमारे स्वप्नों में संकल्पों में कमाई है। पढ़ाई में कमाई बहुत है। पढ़ाई के बाद कमाई नहीं है, जितना पढ़ाई उतनी कमाई। ऐसे नहीं मैं कमाई को अलग टाइम देंगी, नहीं। पढ़ाई में ही कमाई हो रही है, औरों को भी आप समान बनाने के लिए मेहनत नहीं है। सिर्फ भावना है, वह भावना पहुंचती है। फौरन फीलिंग आती है, जैसा सोचते हैं प्रैक्टिकल में फीलिंग आती है। अभी मुझे अभोक्ता, अकर्ता होकर रहना है। करना है तो अब करना है। क्या करना है? मुखड़ा देख ले प्राणी अपने दर्पण में। दर्पण को साफ करना। बहुत साल पहले मेरे से पूछा कि मेडिटेशन में तुम क्या करती हो? मैंने कहा दर्पण को साफ करती हूँ, खुशी होती है। योग में बैठे इधर देखना, उधर देखना वेस्ट आफ टाइम। यह आँखें किसलिए हैं? ऐसे ऐसे यहाँ वहाँ देखने के लिए? अपने को, बाबा को फिर औरों को देखने के लिए यह आँखें हैं। पहले अपने को देखना माना तीसरा नेत्र खुलना। त्रिनेत्री के बाद त्रिकालदर्शी फिर तीनों लोकों की मालिक हूँ ना।

आज बाबा ने कहा खुशी से मरना सिखा रहा हूँ क्योंकि सतयुग में तो शरीर ऐसे छोड़ेंगे, पुराना हुआ है अभी नया लेना है बस, वो अभ्यास अभी करना है। वह तभी होगा जब अभोक्ता, असोचता फिर अकर्ता बनेंगे। मैंने कुछ नहीं किया, फरिश्तों के दोनों हाथ ऐसे हैं। पूर्वजों का एक हाथ ऐसे है दाता। सतयुग में भले रत्न जड़ित ताज़ होगा, वो भी दिन-रात थोड़ेही पहनके रखेंगे, उतारके रखेंगे ना। अभी लाइट का ताज़ है। यह उतारके नहीं रखना पड़ता है। अभी दिन रात सोते खाते पीते ताज पड़ा हुआ है यानि लाइट लाइट लाइट...। तो क्या पुरुषार्थ करें जो यह फीलिंग रहे, लाइट का क्राउन हमेशा पड़ा रहे! फीलिंग यहाँ है, क्राउन यहाँ है। सच्ची दिल यहाँ है, कोई भी मन्सा संकल्प थोड़ा भी साधारण है तो क्राउन नहीं होगा इसलिए शान्त, शुद्ध, श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प से अनेक कार्य अपने आप हो रहे हैं। सिर्फ संकल्प आयेगा यह होना चाहिए। अच्छा हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है, बाबा बैठा है।

सारे कल्प में ऐसा बाबा फिर नहीं मिलेगा। सारे विश्व में ऐसा बाबा नहीं है, शिवबाबा तो नहीं मिलेगा पर ब्रह्माबाबा भी नहीं मिलेगा। ब्रह्माबाबा के द्वारा हर मुरली में बाबा समझाता है, पर बुद्धि शुद्ध हो तो समझ जाती है। एक छोटी-सी बात है, शेरनी का दूध सोने के बर्तन में चाहिए, प्रैक्टिकल बात है। बर्तन सोना, सच्चा सोना, जरा भी सोने में मिक्स न हो, ऐसा मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। कुछ भी हो जाये अमृतवेला बाबा के साथ बैठ जायें। मैं बाबा के साथ बैठती हूँ तो करेन्ट आने लगती है। जब भी बाबा के कमरे में जाऊं, बाबा खटिया पर बैठा होगा तो बाजू में बिठा देगा। बाबा सत् चित्त आनंद स्वरूप है, सत्यनारायण स्वामी है, ऐसे बाबा से मिलने में सुख मिलता इलाही है। तो सारा दिन रात सुख पूछना हो तो

किससे पूछूँ?

कभी मुझे कोई कहता है तुम बिजी थी तो जैसे मेरी ग्लानि की। काम कुछ नहीं है परन्तु सिर्फ सच्चाई क्या है, प्रेम क्या है, इसका गहराई से अनुभव करने कराने की सेवा है।

प्रवृत्ति में रहने वाले कई ऐसे मिसाल हैं जो न्यारे भी रहे हैं परन्तु ऐसा मिसाल बनके रहें, ऐसा संस्कार डालें जो मनोवृत्ति ऐसी रहे, जो मेरा मेरा समाप्त हो जाए। मेरा बाप, मेरा मामा काका, मेरा फलाना...। परिवार में कोई मरा, कोई बीमार हुआ तो क्या करेंगे? अच्छे वायब्रेशन ही देंगे ना। सब ठीक हो जायेगा, यह भावना जो है ना, सदा ऐसी रहे, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा तो अच्छा ही होगा, हुआ ही पड़ा है, इसमें कोई शक्य नहीं है। न अपने में शक्य है, न किसी में शक्य है। अच्छे हैं। इतने सब बाबा के बच्चे आते हैं, कुछ भी थोड़ा ज्ञान का पढ़ते हैं तो वही प्रैक्टिकली करने लग जाते हैं, वण्डरफुल...।

अभी दुनिया देख रही है, हमारे दु:ख हर्ता, शान्ति दाता कब हाज़िर होते हैं, कहाँ हाज़िर होते हैं? तो हमारा समय ऐसा है, बाबा बच्चे, बच्चे कहता है, फिर बच्चे बाबा, बाबा कहते हैं। तो मेरी मनोवृत्ति ऐसी हो जो मुझे देख बाबा को देखें। बाबा ने दिव्य बुद्धि, दिव्य दृष्टि दी है। बाबा कहता है प्रकृति भी तुम्हारे गले में सम्पूर्ण बनने का हार पहनाने के लिए बैठी हुई है। अच्छा।

दूसरा क्लास

"अपनी अव्यक्त स्थिति बनानी है तो व्यक्त भाव, व्यक्त भान से परे रहो, ब्रह्मा बाप समान सब जिम्मेवारियां सम्भालते हुए, विकर्माजीत, कर्मातीत सम्पूर्ण बनने का पुरुषार्थ करो"

भट्ठी माना योग अग्नि। भट्ठी माना अन्दर ही अन्दर अपने आपको सच्चा बनने के लिए गलाना। जब तक सोने को गलाया नहीं जाता है तो सच्चाई पैदा नहीं होती है। पहले जब गलूँ तब सच्चाई का सोना बनूँ। आज का सोना कोई काम का नहीं है। सतयुग में सोना नया निकलेगा। तो अभी हमारे में सच्चाई ऐसी हो जो झूठ का नाम-निशान न रहे। नेचुरल रीयल सच्चा वैल्युबूल बनना है तो कैरेक्टर को सुधारना है। अगर मेरे लाइफ में सच्चाई नहीं है तो मेरी लाइफ क्या है? निश्चय में विजय है। सच्चाई क्या है? सफल हुआ पड़ा है सिर्फ हमको हाँ जी कहना है।

कई पूछते हैं तुम ऐसे कैसे जिंदा रही हो? मैंने कहा सत्यनारायण की कथा सुनते सुनते, ब्रह्मा बाबा सत्यता से ही नारायण बना है। परमात्मा सत्य है और ब्रह्माबाबा सत्य कर्मों से नर नारायण बन गया है। नारी श्रीलक्ष्मी बन जाये इसके लिए हम सबको आगे रखा है। ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियां शिवशक्ति सेना, जब शक्ति है तब कहते हैं यह सेना है, किसकी? शिव के शक्ति की सेना है। उस सेना में हम बैठे हैं? सूर्य, चन्द्रमा, स्टार्स क्यों होते हैं? दुनिया की रोशनी के लिये। मेरा ज्ञान सूर्य बाप, फिर मेरी माँ ब्रह्मा और हम लक्की स्टार चमकते हुए सितारे, ऊपर रहते हैं, रोशनी देते हैं। सारी विश्व को सकाश दे रहे हैं। कई कहते हैं हमको आत्मा का साक्षात्कार हो, बाबा कहते हैं साक्षात्कार से क्या फायदा? है तो आत्मा बिन्दी, परमात्मा बिन्दी, ब्रह्माबाबा की आत्मा भी बिन्दी, मैं भी हूँ बिन्दी, तो कमाल है बिन्दी की। वो इन आँखों से नहीं देखी जाती है, समझ में आता है मैं हूँ आत्मा बिन्दी, ऐसी स्मृति में रहने से कर्मातीत बन करके शरीर छोड़ देंगे। बाबा खुशी से मरना सिखा रहा है क्योंकि सतयुग में खुशी से मरेंगे ना।

बाबा कोई कर्मों का दण्ड नहीं देता है, लोग समझते हैं बाबा जानता है ना। वो इसलिए नहीं जानता है कि तुम खराब कर्म करो, वह तुमको सज़ा दे। नहीं। तुम थोड़ा भी गलत कर्म करते हो तो तुम ही अपने को सज़ा देते हो। तो बाबा अपने आपको कैसे फ्री कर देता है। कहता है मैं सज़ा नहीं देता हूँ। सभी अपने आपको सजा देते हैं इसलिए कर्म पर बहुत ध्यान रखना है। ऐसे नहीं बाबा हमको यह पता नहीं था। तो ऐसे अच्छे कर्म करें जो मेरे को देख सब अच्छा करें। कहते नहीं हैं पर करने लग पड़ते हैं। मन्सा वृत्ति से, भावना से, वाचा बोल से, कर्म सम्बन्ध से सुख शान्ति की प्राप्ति होती है तो लगता है कि हम कौन हैं, किसके हैं, कहाँ रहते हैं, क्या करते हैं। तो मुझे भान आता है हम कहाँ रहते हैं, कहाँ सोते हैं।

हमारा बाबा अव्यक्त हो करके सेवा कर रहा है। तो अव्यक्ति स्थिति क्या है? व्यर्थ भाव या भान से परे यह वर्सा बाबा से ले लो। बाबा और वर्सा, बाप और वर्सा, उस घड़ी ऐसा कोई अनुभव करता है ना, तो लगता है कितने भाग्यवान हैं। उस घड़ी भी कोई साधारण बात करता है ना, ठीक है परन्तु रियलाइज़ होता है, मैं साधारणता में नहीं आऊं। यह वरदानी समय है। मेरा बाबा महादानी है, वरदानी है। अभी हर एक दिल से बोले मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। मैं अभी आपके संग बैठी हूँ

शुक्रिया बाबा। परन्तु जब अन्दर से परिवर्तन होगा तब दिल से निकलेगा कि यह मेरे मीठे बाबा की कमाल है। भगवान कहे यह मेरा मीठा बच्चा है तो और क्या चाहिए!

जनवरी मास में जब बाबा अव्यक्त हुआ मैं पुने में थी। सन् 1969 जनवरी 13 तारीख की टेप में रात्रि क्लास की मुरली आई थी मेरे पास, वो मैं सुन रही थी। संतोष बहन का भाई भी वहाँ बैठा था, उसका मेरे से बहुत स्नेह था, तो वो मेरे को देखके सोचता था, मेरी बहन भी ऐसी बनें। तो मुरली सुन रहा था वो अहमदनगर जाने वाला था, मैंने कहा नहीं जाओ बैठ जाओ तो बैठ गया। हमारे पास इन्द्रा बहन जो मेरी सखी थी, सेवा में बहुत साथी थी। उसको भी मैंने कहा तुम भी आ जाओ, तो वो भी आ गई। तो मुम्बई से 9 बजे शील बहन का फोन आया कि बाबा अव्यक्त हो गया। फोन मैं उठा नहीं सकी, इन्द्रा को दिया तो मैंने कहा सच है? तो सब जगह से यही आवाज़ आने लगा कि सच! कैसे? कुछ हो तो नहीं गया... ऐसे होता रहा। फिर सुबह को ट्रेन में चढ़के आई। बाबा को देखा, यहाँ तो आंसू बहाने के लिये मना है, आंसू नहीं आये लेकिन मेरा बाबा, बस। जून 68 में मैं 8-9 दिन मधुबन में रही थी, उस समय ट्रेनिंग सेन्टर बन रहा था। बाबा ने मुझे बहुत अच्छी पालना दी और कहा बच्ची यह ट्रेनिंग सेन्टर बना रहा हूँ, तुम यहाँ टीचर्स को ट्रेनिंग देना। फिर जहाँ अभी इन्द्रप्रस्थ में कमरा है, कहा यहाँ तुमको कमरा बनाके दूँगा, प्लान सारा बता दिया था। मैंने कहा बाबा मैं आती जाती नहीं, मैं क्या करूँगी। तो जब बाबा अव्यक्त हो गया, मेरे को आया बाबा अभी मुरली कौन सुनायेगा? फौरन शाम को बाबा गुल्जार दादी में आया, तभी से गुल्जार दादी का फिक्स है। बाबा ने कहा मैं गया नहीं हूँ, मैंने सिर्फ कमरा चेंज किया है। खास मेरे को देखते हुए कहा मैं इधर ही हूँ। तुम बाबा के कमरे में जायेंगी, देखेंगी बाबा बैठा है। बाकी मुरली रिवाइज होगी, दादी सुनायेगी, मुरली चलेगी। हर बात के लिए डायरेक्शन दिया। फिर कोई का क्वेश्चन नहीं उठा, जो हुआ ड्रामा, पर बाबा ने सारा प्लान एडवांस में बता दिया था। विदेश सेवा के लिए भी बाबा प्रेरणायें देता रहता था। जब कोई विदेश की पोस्ट आती थी तो ईशू दादी को बाबा कहता था तुम यह पत्र जनक को दे दो। मैं उन्हें पत्र का जवाब लिखती थी, बाबा भी 2-4 अक्षर लिख देता था। उसमें चन्द्रा ने एक बारी लिखा कि तुम तो मधुबन में बैठी हो, बाबा के घर की रोटी खा रही हो, हमको तो नसीब में नहीं है। वो बाबा के यज्ञ के लिए कुछ न कुछ भेजती थी, तो बाबा कहता था रोटी पकाके, उसे सुखाके वह रोटी उसको भेज दो, तो बिचारी उसे खाके खुश हो जाए। फिर बाबा कहता था थोड़ा बादाम अच्छी तरह से लिफाफे में डालके भेज दो।

फिर रजनी बहन (जयन्ती बहन की लौकिक मां) का पत्र आता था, तो उसके अक्षर ऐसे थे जो कोई पढ़ न सके, पर पत्र का जवाब बाबा इतना अच्छा देता था, उसको जैसे मुरली मिल जाती थी। जब टेप का रिवाज़ निकला वो भी लण्डन से पहले-पहले उन्होंने ही भेजी थी। उसी टेप में भरी हुई मुरलियां अभी हमको मिल रही हैं। एक बारी बाबा को मैंने कहा, बाबा रूबरू भी मुरली नहीं सुनती हूँ, टेप भी नहीं मिलती है, कागज़ में पढ़ते हैं ऐसे कहते रोया.. तो उसी समय फीलिप्स का नया टेप मशीन दिल्ली से मंगाके अहमदाबाद में रखवा दिया, मैं गई तो वह टेप मशीन मेरे लिए रखी थी। उसे देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि अब मुझे डायरेक्ट बाबा का आवाज़ सुनने को मिलेगा। उसके बाद पुने के नजदीक नारायणगांव में इस्माइल भाई करके बहुत अच्छा लगन वाला भाई था, उसने अपना स्कूटर बेच करके बाबा को 13 हजार भेज दिये कि मुझे भी टेपरिकार्ड भेज दो, तो बाबा ने मेरे बाद उसके पास टेपरिकार्ड भेजा। जिसका बाबा की मुरली के लिए इतना प्यार रहा है, उन्होंने अपनी जीवन से कईयों की सेवा की है। तो अभी आप लोगों को जो मिल रहा है, बाबा की यादों से, बाबा ने पहले याद किया, प्यार किया है वो याद-प्यार खींचके, बाबा ने अपना बनाके आप लोगों को मुस्कुराना सिखा दिया है। मुस्कुराओ सभी, एक मुस्कराना है मेरा बाबा, दूसरा मुस्कराना है मीठा ड्रामा, तीसरा मुस्कराना है अव्यक्ति मुस्कराना, जो वो वायब्रेशन सबको मिलें।

मनोवृत्ति में स्मृति, स्मृति में समय, बाप, मैं स्वयं आत्मा, ईश्वरीय परिवार और विश्व पाँच बातें हैं। पहले मैं आत्मा, मेरा बाबा, संगम का समय है, इतना बड़ा परिवार है, सारी विश्व की सेवा कराने के लिए बाबा जैसे खींच रहा है, बना रहा है या कहेंगे खींचके बना रहा है। हम चलें वतन की ओर खींच रहा है कोई हमको डालके प्रेम की डोर... किसको अनुभव है? दिल को वतन में खींच रहा है।

प्रेम और स्नेह में फर्क है? पहले बच्चे हैं तो प्यार है, फिर देखता है बच्चा सबकुछ भूल मेरे को ही याद करता है और कोई को याद नहीं करता है। आशिक माशुक की तरह याद करता है, तो वो है प्रेम। तो प्रेम की मस्ती से रूह में स्नेह भरता जा रहा है। रूहानी स्नेह सम्पन्न बनने में सहयोग दे रहा है। रूहानी स्नेह भगवान का खींचके सम्पन्न बना रहा है।

किसी ने मेरे से पूछा क्या निशानी है विकर्माजीत की? कोई विकल्प नहीं आयेगा, कोई व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। विकर्माजीत वो बनेगा जिसको कर्मातीत बनने की लगन होगी। अब हम सबको कर्मातीत बनकर सम्पूर्ण बनना है ना। कोई इतनी भी कमी न हो। जैसा मेरा बाबा सम्पूर्ण है, यहाँ साकार में होते हुए पुरुषार्थ करता हुआ देखा विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण बनता हुआ देखा। भले बाबा है, सारी जिम्मेवारी बाबा के ऊपर है। भण्डारी में नमक है कि नहीं, बच्चों को कपड़ा है या नहीं, बाबा की जिम्मेवारी है परन्तु पुरुषार्थ में विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण

फिर अव्यक्त फिर फरिश्ता आज के दिन हरेक अपने आपको देखे। विकर्माजीत के बिगर कर्मातीत नहीं बनेंगे। विकर्माजीत बनने से कर्मातीत भी बनते हैं और ऑटोमेटिक कर्म श्रेष्ठ होता है। कर्म छूटता नहीं है, कर्मों को श्रेष्ठ बनाने से सतयुगी प्रालब्ध बनेगी। शान्तिधाम में जायेंगे, कर्मातीत स्थिति से आ जा मेरे मीत, मेरे गीत तुमको बुलाते हैं, बाबा के गीत बुला रहे हैं। तो कर्मातीत, विकर्माजीत, सम्पूर्ण, अव्यक्त, फरिश्ता यह भान ऐसा आता है, जो अहंकार मरा, अभिमान गया, देह के भान से परे।

किसी ने पूछा देह के भान से परे और विदेही में क्या फर्क है? मैंने कहा विदेह मुक्त कहा जाता है। पहले पुरुषार्थ में मुझे देहभान न रहे। पहले अहंकार मरा, अभिमान गया पर चलते-फिरते, खाते-पीते देह का भान न रहे तो विदेह मुक्त। विदेह में फिर वो रहेगा जो ट्रस्टी है। ऐसा ट्रस्टी यज्ञ में रहते हुए एक पेनी भी मेरी नहीं, एक रूमाल भी मेरा नहीं इसलिए मेरा रूमाल भी कभी गुम नहीं होता है। कोई रोता है तो उसको दे देती हूँ।

एकांतप्रिय रहो, भले बहुतों के बीच रहते हैं पर एकांत है मुझे, कहेंगे टाइम नहीं है लेकिन बहुत टाइम है। एक के अन्त में जाने की जो हॉबी है वो एकांतप्रिय, अन्तर्मुखी, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाती है। फिर एकानामी से चलना, एकनामी, एक के नाम से हमारा सारा काम पूरा हो गया। एकानामी भी हुई, एकांतप्रिय भी हुए, एकाग्रता भी आ गई, तो कभी चलायमान या डोलायमान नहीं होते, अचल अडोल रहते, यह है हमारा राजयोग। जो राजाओं का राजा बनाने वाला बाबा राजयोग सिखा रहा है। ओ.के.।

"सदा सन्तुष्टमणी बनो, स्वयं से, बाप से और परिवार से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट लो"

(गुल्जार दादी जी)

बाबा ने हमें कितना सम्मान दिया है, दुनिया में कितना भी बड़ा सम्मान मिले लेकिन फिर भी मनुष्य, मनुष्य को देगा। हमको भिन्न-भिन्न सम्मान देने वाला कौन? मेरा बाबा। सबके जिगर से निकलता है ना मेरा बाबा, प्यारा बाबा और मीठा बाबा। बाबा कहा और माया गयी क्योंकि बाबा के आगे माया ठहर नहीं सकती। जैसे लाइट के आगे कोई भी जानवर ठहर नहीं सकता, न ही अटैक कर सकता है। तो बाबा के आगे माया कुछ नहीं कर सकती, दूर भाग जाती है।

तो आज बाबा ने हमें सम्मान दिया है - तुम सन्तुष्ट मणियाँ हो। जो सन्तुष्ट होगा वो मणी के मुआफिक चमकेगा जरुर, लाइट माइट रूप होगा क्योंकि लाइट चमकती है ना। तो बाबा ने कहा है मैं हरेक बच्चे को देखता हूँ, एक एक मेरा बच्चा क्या नज़र आता है? सन्तुष्टमणी। और सन्तुष्ट मणी की विशेषता क्या है? सन्तुष्टमणी की विशेषता यह होगी जो वो अपने को भी प्रिय होगी, बाप को भी प्रिय होगी और परिवार को भी प्रिय होगी। तीनों को प्रिय है माना सन्तुष्टमणी है। कई समझते हैं बाबा मेरे से सन्तुष्ट है तो सबकुछ हो गया या मैं बाबा से सन्तुष्ट हूँ तो सबकुछ हो गया, लेकिन नहीं। बाबा कहते हैं परिवार भी जरुरी है, क्यों? क्योंकि हम सिर्फ धर्म स्थापन नहीं कर रहे हैं, धर्म के साथ राज्य भी स्थापन कर रहे हैं। जो भी दूसरे डिवाइन फादर्स आये हैं वो केवल धर्म स्थापन करते हैं, पीछे राज्य चलता है। लेकिन बाबा हमारा धर्म और राज्य दोनों साथ-साथ स्थापन करते हैं। तो परिवार बहुत आवश्यक है, हम कहें बस मैं हूँ ना, तो राजा बन जायेंगे? किस पर राज्य करेंगे? अपने ऊपर ही राज्य करेंगे क्या? प्रजा तो चाहिए ना इसीलिए बाबा कहते हैं कि यह ब्राह्मण परिवार सारे कल्प में बहुत प्यारा है, आप सब भी अपने से पूछो।

हम सबको एक एक को ढूँढके निकाला किसने? हमको पहले तो पता ही नहीं परमात्मा क्या है? हम कैसे ढूँढेंगे परमात्मा को? परमात्मा द्वारा ही पहचाना ना। परमात्मा बाप ने हम एक एक को कहाँ से निकाला है। कितने देशों के एक एक करके आये हैं, इण्डिया में भी देखो कोने कोने से गांव-गांव से कहाँ कहाँ से आये हैं, निकाला किसने? हम सबको बाबा ने ढूँढके निकाला है। हम ढूँढ नहीं सके लेकिन बाबा ने हमें ढूँढ लिया तो भाग्य देखो भगवान ने हमें ढूँढ लिया। भगवान को सभी ढूँढ रहे हैं, कितना बिचारे प्रयत्न करते हैं कि हे भगवान, हे भगवान। और हमको भगवान ने खुद आके ढूँढ लिया, तो है ना भाग्य! तो बाबा कहते हैं ऐसे एक एक ब्राह्मण परिवार की आत्मा बहुत भाग्यवान है और हमारा कितना बड़ा परिवार है। तो परिवार में भी प्यार जरुरी है।

तो जो सन्तुष्टमणी होंगे उसका परिवार से भी प्यार होगा। हमें बाबा से तो प्यार है, तब तो यहाँ पहुँचे हैं या रहते हैं। अपने से भी प्यार होना चाहिए, मैं कौन हूँ? बाबा ने हमको कितने सवमान दिये हैं इसलिये अपने आपसे भी प्यार होना चाहिए। मैं भगवान का बच्चा हूँ, कम थोड़ेही हूँ। यह स्मृति रहे मेरा बाप कौन? तो हम एक एक की स्थिति कितनी ऊंची होगी! कभी कुछ साधारण हो जाता है तो अन्दर से आना चाहिए कि मैं कौन और मेरा बाबा कौन? हमारे परिवार का मर्तबा क्या है?

सारे कल्प में इतना बड़ा परिवार होता ही नहीं है, हो ही नहीं सकता क्योंकि यह तो मुख का परिवार है। परिवार में आप एक एक की विशेषता देखो। बाबा ने हरेक को कोई-न-कोई विशेषता दी जरुर है लेकिन उस विशेषता को हम कार्य में लगायें या नहीं लगायें वो हमारे ऊपर है।

तो सन्तुष्टमणी वही बन सकता है, सन्तुष्ट वही रह सकता है जिसको सर्व प्राप्तियाँ हों। अगर कोई भी अप्राप्ति होगी तो सन्तुष्टी नहीं। कितनी भी कोशिश करेगा लेकिन अगर कोई भी सन्तुष्टता में कमी है तो सदा खुश नहीं रहेगा। हमारा बाबा कैसा है, जब भी देखो बापदादा दोनों मुस्कराते रहते हैं, दृष्टि देते रहते हैं, मुस्कराते रहते हैं। तो हम भी अपने से पूछें कि मेरी सूरत कैसी है? चलन और चेहरे से पता पड़े कि इसको कुछ मिला है। शक्ल बोले हमको कुछ मिला है। भगवान ही हमारा हो गया - है ना यह निश्चय। भगवान किसका है वो हमारा बाप है, सबकुछ है। तो हमारे चेहरे पर कितनी खुशी होनी चाहिए! क्योंकि हमारे जैसा खुशनसीब कोई नहीं। जब भगवान बाप भी हो, शिक्षक भी हो, सतगुरू भी हो। भगत बिचारे कितना ढूँढते रहते हैं, अभी तक भी। अभी दु:ख बढ़ रहा है, यह तो सभी जानते हैं। बाबा कहता था अचानक दु:ख के पहाड़ गिरेंगे। हम लोग सोचते हैं आयेंगे तो देख लेंगे। एक कहानी है भट्ठी में चारों और आग लगी थी फिर भी बिल्ली के जो पूंगरे थे, वो सेफ रहे। तो बाबा कहते हैं आप बच्चे सदा सेफ हो, सेफ रहेंगे लेकिन आपको रहमदिल, दाता बन करके इन दु:खियों को शान्ति की, शक्ति की, खुशी की किरणें दो। ऐसी सेवा करो और सदा स्वयं से, बाप से और परिवार से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट भी लो। तो हरेक अपने से पूछे और चेक करे कि मैं सन्तुष्टमणी हूँ? यह तीनों ही बातें अपने साथ हैं? परिवार भी सन्तुष्ट होना चाहिए। यह नहीं कि मैं तो अपने से सन्तुष्ट हूँ ही, वो तो अभिमान भी हो जाता है ना। लेकिन परिवार प्रूफ है मैं सन्तुष्टमणी हूँ, मेरे में सर्व प्राप्तियाँ हैं इसलिए बाबा कहते हैं संस्कार मिलन की रास करो। जो पुराने संस्कार बहुत जन्मों के ईर्ष्या, हषद, क्रोध, लोभ के हैं वो सुखी बनने नहीं देते। जैसे हाथ में हाथ मिलाके डांस करते हैं, ऐसे संस्कार मिलन की रास माना एक दो में संस्कार मिल जायें। संस्कार नहीं मिलते हैं तो चारों सबजेक्ट में से कुछ ज्ञान की प्राप्ति में फर्क है, धारणा में फर्क है। हमें चारों सबजेक्ट में परफेक्ट होना है। ऐसे नहीं ज्ञान तो मेरे को है, घण्टा भी सुना सकती हूँ, कैसी भी टॉपिक पर बोल सकती हूँ वो तो ठीक है, है तो अच्छा है लेकिन चार ही सबजेक्ट मेरे में हैं? अगर चारों ही सबजेक्ट हैं तो मेरा संस्कार मिलन जरुर होगा।

परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार तो होंगे ही, किसी को क्रोध बहुत जल्दी आ जाता है। कहेंगे मैं तो ठीक हूँ, लेकिन वह बहुत क्रोध करती है। अगर आपके परिवार में कोई कमजोर होता है, गिरा हुआ होता है तो उसको लात लगाके जायेंगे क्या? सहारा देंगे ना। तो इसी रीति से बाबा कहते हैं संस्कार मिलन की रास करो। अभी बाबा यही देखने चाहता है। तो संस्कार मिलन की डेट बाबा को बताना। अगर सभी विघ्न विनाश हो गये तो हम अपने घर चलेंगे फिर अपने राज्य में आयेंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"ऐसे तपस्वी बनो जो आत्मा चमकता हुआ डायमण्ड बन जाये, सब कमजोरियां समाप्त हो जायें"

बाबा ने हमें जो मुख्य सब्जेक्ट दी हैं कि हे बच्चे अब तुम्हें सच्चा डायमण्ड बनना है अर्थात् सम्पूर्ण दैवी गुण खुद में भरकर सम्पन्न बनना है, उसके लिए तुम्हें याद की यात्रा में रहना है। तो हम कहाँ तक इस सबजेक्ट में पास हैं? ज्ञानी तू आत्मा तो बन गये, सेवा की भी बहुत लगन, उमंग-उल्लास सभी में है। परन्तु जो हमारे में संस्कार परिवर्तन की शक्ति चाहिए, जो राजयोग में सभी को अष्ट शक्तियां सुनाते, जिस पर बाबा की अनेकानेक मुरलियां चली हैं कि तुम मास्टर सर्वशक्तिमान् हो, जिस घड़ी, जिस शक्ति का आवाहन करो वह शक्ति हाज़िर हो जाए। ऐसी हम शिव की शक्तियां हैं? तो अब हमें अपने पुराने 63 जन्मों के विकर्मों को विनाश कर कर्मातीत बनना है – ये है हमारी अन्तिम सब्जेक्ट। जिस सब्जेक्ट के साथ में बाबा कहते त्यागी बनो। त्याग, तपस्या और वैराग्य। सेवा की सब्जेक्ट का पलड़ा तो भारी है, सेवायें तो चल ही रही हैं। लेकिन अपने आप से पूछो कि मैं बेहद का वैरागी हूँ? मैं सबसे उपराम हूँ? बेहद के वैराग्य की गहराई में जाओ। सेवायें, सेन्टर उनसे भी बेहद के वैरागी। दूसरा – हर एक अपने आपसे पूछो कि मेरे अन्दर कहाँ तक कम्पलीट त्याग है या कौन सा सूक्ष्म अन्दर में चोर है, जो वैराग्य आने नहीं देता? चाहे सेन्टर, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक, चाहे अच्छे, चाहे कोई भी हैं, बाबा के सिवाए बाकी कहाँ भी मेरी सूक्ष्म रग है? ममता है? मेरा-पन है? अपने आप का भी बहुत नशा है, नाजुक हूँ? अलबेली हूँ? सुस्त हूँ? जिद्दी हूँ? परचिंतन करने वाली हूँ?... या मैं इन सबसे उपराम हूँ? सूक्ष्म कौन सा मेरे में अभी चोर है या नहीं है? मैं कम्पलीट त्यागी हूँ या मैं इन संस्कारों की पालनहार मां हूँ? संस्कार मेरे बेटे हैं ना, जो उनकी मैं पालना करती हूँ? जवाब देते क्या करें – मेरे में यह कमजोरी है ना।

कमजोरियों की एलाऊ है क्या? कौन सी मुरली में एलाऊ है? किस डिक्सनरी में एलाऊ है? हमारी ईश्वरीय डिक्सनरी में एलाऊ है? श्रीमत में है? या कहेंगे इतना तो बाबा मैंने समझा ही नहीं था कि ऐसा भी मरना होगा। कई फिर कहती मैं साफ कहती हूँ ना कि मैं कमजोर हूँ, मेरे में बाबा इतनी मरने की शक्ति नहीं है ना, क्या ये बाबा को जवाब देते? कई कहते मैं बहुत थक गई हूँ, बस इससे तो मेरे को उठा लो न बाबा, बस मुझे कुछ नहीं चाहिए। यही आप लोगों की रूहरिहान है ना? या ये चैलेन्ज की है कि बाबा हम सारे विश्व पर विजय पाने वाले विजयी सितारे हैं? अगर बाबा के हम मददगार हैं, तो बाबा ने तो अभी तक कहा ही नहीं है कि बच्चे फुलस्टाप। तो हम क्यों थक जाते हैं?

ऐसी योग की रूचि अपने में भरो जो मेरा आधार, मेरा प्यार, मेरा प्राण, मेरी नींद, मेरा आराम, सब कुछ मेरा बाबा। मीठे बाबा की यादों मे समाये रहो इसलिए अभी आप सब यहाँ से तपस्वी बनकर जाओ, जिसको बाबा ने कहा चमकता हुआ डायमण्ड बन जाओ। गहरी योग की स्थिति का अनुभव करो। अशरीरी बन, अशरीरी स्थिति क्या होती, उसका अनुभव करो। कछुए की तरह सब सेवाओं को समेट करके बाबा के लव में लीन हो जाओ। ऐसे हर एक अनुभव करे – हम इस भृकुटी के बीच चमकती हुई आत्मा मणि हूँ। मौन में रहो, साइलेन्स भट्ठी में रहो, अन्डरग्राउण्ड रहो। ऐसा अनुभव हो कि आज अगर मेरा शरीर छूटे तो मैं बाबा की गोद में ही रहूँ। जो भी पिछले हिसाब हों, ऐसे लगे सब हिसाब चुक्तू होते जा रहे हैं और मैं आत्मा कर्मातीत बनने के बिल्कुल नजदीक हूँ। ऐसी योग की भट्ठी करो। ऐसे भट्ठी में क्लीयर आइने में देखो कि अभी तक मुझ डायमण्ड में कौन से दाग हैं? अगर कोई के पास सूक्ष्म अपने पीछे के संस्कारों की, कोई भी कमी की, कुछ भी रियलाइजेशन हो तो बाबा ने विधि दी है कि उनको लिखकर क्लीयर कर दो तो बुद्धि खाली हो जाए। बुद्धि पर कोई भी सूक्ष्म बोझ हो तो उसे खत्म करो, कई प्रकारों के संस्कार पीछे वाले खींचते हैं। कोई पुरुषार्थ से थक जाते, संस्कारों से थक जाते तो पुरानी दुनिया में जाने चाहते। कोई साथी चाहते, कोई सूक्ष्म किसी के नाम-रूप में फंसने चाहते, और कोई कहते ज्ञान तो बड़ा अच्छा लगता परन्तु चलना बड़ा मुश्किल है, न इधर चल सकते, न उधर जा सकते। इससे तो बाबा की गोद में चली जाऊं, यही रास्ता है। कभी-कभी थककर ऐसे सूक्ष्म संकल्प आते हैं। अगर संगमयुग पर भी थक जायें तो सारे कल्प में कौन सा युग आयेगा, जो थक मिटायेंगे! उनको स्वर्ग में तो बाबा की गोद नहीं मिलेगी, जो कहते कि बस बाबा उठा लो। न सेन्टर में चल सकती, न घर जा सकती, मैं तो बीमार रहती हूँ, मैं तो बोझ हो गई हूँ... आदि-आदि.. ऐसे अनेक प्रकार के थकावट के संस्कार पैदा होते हैं। लेकिन बाबा कहते बच्चे बीमार हो तो भी बाबा को याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी। एक पतंगा होता जो जलती ज्योति पर मिटता है। ये नहीं कि अरे जलने के लिए कौन जावे, जाऊं दूर जाके नाचूँ, नहीं वो ज्योति पर फिदा हो जाता है। हमसे कोई पूछे ज्योति में फिदा होना क्या है? हम कहते बस तपस्या करो–यही है फिदा होना। यह तपस्या ही सब विघ्न विनाश कर देगी इसीलिए तीन मास सब अव्यक्त वतन में उड़ जाओ, यहाँ रहो ही नहीं जो यहाँ की भाषा चले। कछुए की भांति सब समेट लो। ऐसे नहीं कि सर्विस बिगर बोर हो जायेंगे।

अपनी दिनचर्या तीन मास के लिए ऐसी बनाओ जो ऐसा महसूस हो कि हम चलते-फिरते भी अखण्ड योग में हैं। जैसा हम करेंगे ऐसा देख सभी करेंगे। सेन्टर पर अखण्ड योग बाबा के कमरे में सुबह चार बजे से रात को 8-9 बजे तक रखो और तीन मास जितना हो सके सिम्पल खाना बनाओ। बस गुरुवार के दिन अच्छा भोग बनाओ। बाकी जितना हो सके कम बोलो, धीरे बोलो, सोच के बोलो, तोल के बोलो, मीठा बोलो, युक्तियुक्त बोलो, सत्य बोलो। सत्यता की नींव पक्की डालो। आज तक की किसी की तेरी मेरी बातें, झूठी सच्ची बातें, गुमराह करने की आदत हो, वैर हो, विरोध हो, वो सब बाबा को लिख कर खत्म करो। और यहाँ से बाबा की योगिन बच्ची बनके जाओ, प्योर डायमण्ड बनकर जाओ। बाबा उन्हों को ही कहता सचली कौड़ी। कौड़ी से हीरा बनो। अमरीकन डायमण्ड नहीं बनो, सच्चा हीरा बनो।

अपनी सूक्ष्म से सूक्ष्म बात चेक करो और लिखकर बाबा को दो जिससे बुद्धि एकदम साफ हो जाए। दिल साफ मुराद हांसिल। बाबा के सामने कोई भी ऐसे वैसे बोलता तो सदा के लिए वो दिल से उतर जाता। तो अब ऐसी तपस्या करो जिससे कोई भी विघ्न है, सेन्टर्स के, यज्ञ के, तेरे-मेरे के वह सब खत्म हो जायें। यह तपस्या है ही विघ्नों को विनाश करने की। अब अपनी मर्जी छोड़, मालिक की जो मर्जी है उस पर चलो। बाबा की श्रीमत ही जीवन का सच्चा श्रृंगार है। चलो-बैठो, खाओ-पियो, सर्विस करो, कुछ भी करो श्रीमत की लकीर के अन्दर रहकर करो। पहले चार्ट में देखो जो मैं कर रही हूँ वो बाबा की श्रीमत है? इसलिए अपनी मर्जी नहीं परन्तु बाबा की मर्जी, प्रभु तेरी मर्जी, उनकी पलकों में पलो। बाबा हमें पलकों पर बिठाकर ले जाने वाला है इसलिए बाबा कहते जो हो जैसी हो, पढ़ी हो न पढ़ी हो, बूढ़ी हो, अबला हो, अहिल्या हो.... जो कुछ भी हो, मेरी हो।

तो हम चाहती हूँ कि हमारे सभी सेन्टर्स अब विघ्न मुक्त बनें। विघ्न ही डिससर्विस के कारण बनते हैं। और सबसे अधिक जो नाम-रुप की बीमारी है। चाहे भाई, चाहे बहन से थोड़ा भी लगाव होता है तो नाम बदनाम होता है। लगाव एक ऐसी चीज़ है जो खुद को रियलाइज नहीं होता, दूसरे उसको रियलाइज कराते तो भी रियलाइज नहीं होता इसलिए बाबा कहते बच्चे, सूक्ष्म लगाव झुकाव और आपस के टकराव को समाप्त करो। यही है भट्ठी की सफलता। अच्छा–ओम् शान्ति।